

॥ आरती श्री विन्ध्येश्वरी जी की ॥

□ Aarti Shri Vindheshvari Ji Ki □

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी तेरा पार न पाया ॥ टेक. ॥
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तरी भेंट चढ़ाया । सुन. ।

सुवा चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया । सुन. ।
नंगे पग अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया । सुन. ।

उँचे उँचे पर्वत भयो दिवालो नीचे शहर बसाया । सुन. ।
कलियुग द्वापर त्रेता मध्ये कलियुग राज सबाया । सुन. ।

धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया । सुन. ।
ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावैं मनवांछित फल पाया । सुन. ।

॥ इति श्री विन्ध्येश्वरी आरती सम्पूर्णम् ॥